# " प्रा क्क थ न "

:: प्रा क्क थ न ::

[१] विषय का चुनाव :

शोधार्थी को शोध-कार्य प्रारंभ करने से पहले विषय का योग्य चुनाव करना आवश्यक है। आजकल अनेक कवियों तथा साहित्यकारों और उनकी कृतियों पर शोध-प्रबन्ध के लिए काम हो चुका है। मैंने सोचा कि, एक ऐसा विषय चुने जिसपर शोध कार्य न हुआ हो।

डॉ. डी. के. गोटुरीजी के निर्देशन में मैंने भगवतीचरण वर्माजी कृत "भूले-बिसरे चित्र" इस उपन्यास को लघु शोध-प्रबन्ध के लिए चुन लिया। "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास को मैंने चार अध्यायों में विभाजित कर "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में प्रतिबिंबित समाज" ऐसा शीर्षक देकर विषय का चुनाव कर लिया।

[२] "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास पर अनुसंधान का कार्य :

विषय का चुनाव करने से पहले शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय में मैंने "लघु-शोध प्रबन्ध" की सूची पत्र को देखा। तब मुझे पता चला कि, भगवतीचरण वर्माजी के साहित्यपर कार्य हो चुका है, साथ ही साथ "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास पर भी कार्य हो चुका है। परंतु "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में प्रतिबिंबित जो समाज है उसपर किसीने शोध कार्य नहीं किया है।

इसलिए मैंने निश्चय किया कि, एक नये ढंग से "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में प्रतिबिंबित समाज का अनुसंधान कार्य प्रारंभ किया जाए। डॉ. डी. के. गोटुरीजी के निर्देशन में "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यासपर अनुसंधान कार्य प्रारंभ किया।

[३] अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे मन में निम्न प्रश्न थे :

अनुसंधान का कार्य प्रारंभ करने से पहले मेरे मन में निम्न तीन प्रश्न थे।

[१] "भूले-बिसरे चित्र" शीर्षक का अर्थ क्या है ?

[२] क्या "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में सही अर्थों में स्वाधीनतापूर्व भारतीय समाज प्रतिबिंबित हो चुका है ?

[३] "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में किन किन समस्याओं का चित्रण हुआ है ?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर उपसंहार में दिए हैं।

[४] अध्याय विभाजन :

अनुसंधान की सुविधा के लिए अध्याय विभाजन निम्न प्रकार से किया है।

[१] प्रथम अध्याय - "भगवतीचरण वर्माजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।"

प्रथम अध्याय में भगवतीचरण वर्माजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने से यह पता चलता है कि, भगवतीचरण वर्मा का व्यक्तित्व विविधमुखी है। उन्हें अपने प्रारंभिक जीवन में अनेक कठिनाईयों का तथा संघर्षों का सामना करना पड़ा। साहित्यिक जगत् में उनका पदार्पण कवि के रूप में हुआ।

[२] द्वितीय अध्याय - "भगवतीचरण वर्माजी के उपन्यासों का सामान्य परिचय।"

द्वितीय अध्याय में भगवतीबाबू के उपन्यासों का सामान्य परिचय दिया है। उनके उपन्यासों का अध्ययन करने से पता चलता है कि, भगवतीबाबू के उपन्यास विविध कोटी में आते हैं। चित्रलेखा, "भूले-बिसरे चित्र", सीधी-सच्ची बाते, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, आखरी दाँव आदि उपन्यास विविध विषयों को स्पर्श करते हैं।

[३] तृतीय अध्याय - "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में प्रतिबिंबित समाज।"

तृतीय अध्याय में "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में प्रतिबिंबित समाज का चित्रण किया है। "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के तृतीय अध्याय में संयुक्त परिवार व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, नारी समस्याएँ, हिन्दु-मुस्लिम संघर्ष, सामंत-जमींदारी प्रथा, असहयोग आंदोलन आदि अनेक समस्याओंका चित्रण किया है।

[४] चतुर्थ अध्याय - "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में प्रतिबिंबित समाज की विशेषताएँ।"

चतुर्थ अध्याय में "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में प्रतिबिंबित समाज की विशेषताओं का परिचय दिया है। साथही इसमें प्रतिबिंबित सामाजिक जीवन की विशेषताओं का मैंने इस अध्याय में चित्रण किया है। जैसे संयुक्त परिवार-व्यवस्था, वर्णव्यवस्था, अछूत समस्या, नारियों की अनेक समस्याएँ, हिन्दु-मुस्लिम संघर्ष, आर्थिक संचेतना, जमींदारी प्रथा आदि।

[५] ऋ ण नि र्दे श :

भगवतीचरण वर्माजी कृत "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास पर अनुसंधान का कार्य करते समय मैं अनेक लोगों के ऋण की पात्र हूँ, जिनके प्रति ऋणनिर्देश व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

सबसे प्रथम आदरणीय डॉ. डी. के. गोटुरीजी के ऋण मुझपर है। यह शोध-प्रबंध उनके आशीर्वाद एवं कृपापूर्ण सक्षम निर्देशन में लिखा गया है। उनके कृपा का एहसास मुझे जीवन में हमेशा रहेगा। मैं उनके प्रति आत्मीयतापूर्ण ऋण प्रकट करती हूँ।

आदरणीय डॉ. वसंत मोरेजी, डॉ. पी. एस. पाटील, प्रा.हिरेमठ, प्रा. तिवले, डॉ. चव्हाण और प्रा. कटकोळेजी के आशीर्वाद और प्रेरणा

सदैव मेरे साथ रहें हैं। अत: उनके प्रति मैं सविनय आदर प्रकट करती हूँ।

मेरे परिवार के माता-पिता, सास-ससुर, भाईयों का साथ मुझे मिला। उन्होंने मुझे शोधकार्य में प्रोत्साहित किया, इसलिए मैं उनका आभार प्रकट करती हूँ। इस कार्य में मेरे पति श्री. प्रा. काशिनाथ शेकर कटकोळेजी का सहकार्य अधिक मिला, उनके आत्मीय एवं प्रेरक निरीक्षण और निर्देशन का प्रतिफलन यह प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध है। मेरे पिताजी और माताजी का शुभाशीर्वाद इसी शोध-कार्य में हमेशा ही रहा। उनके प्रति भी मैं ऋण प्रकट करती हूँ। साथही साथ आदरणीय श्री. रायबागकरजी तथा टंकलेखक श्री. झोकांडेजी का सहयोग मुझे इस कार्य में अधिक मिला, जिनके प्रति भी मैं ऋण प्रकट करती हूँ।

शोध - छात्रा

[ कु. सरला सोमशेखर तौकरी ]

स्थान : कोल्हापुर

दिनांक: 30/06/1994.

:: अनुक्रमणिका ::


पृष्ठ संख्या

प्राक्कथन -

प्रथम अध्याय -

"भगवतीचरण वर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व" 1 से 16

द्वितीय अध्याय -

"भगवती-चरण वर्मा के उपन्यासों का सामान्य परिचय।" 17 से 44

तृतीय अध्याय -

"भगवतीचरण वर्मा कृत "भूले-बिसरे चित्र"
उपन्यास में प्रतिबिंबित समाज।" 45से 63

चतुर्थ अध्याय -

"भगवतीचरण वर्मा के "भूले-बिसरे चित्र"
उपन्यास में प्रतिबिंबित समाज की विशेषताएँ।" 64 से 76

उपसंहार। 77 से 83

परिशिष्ट।

संदर्भ ग्रंथ सूची।